SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कबीरदास जी के विचारों की प्रासंगिकता

सुशांत चक्रवर्ती, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
विवेकानंद, महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
दीप्ति गोस्वामी, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा (राजिम), रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
सुशांत चक्रवर्ती, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
विवेकानंद, महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
दीप्ति गोस्वामी, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय,
नवापारा (राजिम), रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/08/2021
Revised on : -----
Accepted on : 19/08/2021
Plagiarism : 00% on 13/08/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Friday, August 13, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 2123 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

dchjnkl th ds fopkjksa dh izklafxdrk "kks/k lkj & lekt ds fodkl dh ijaijk lnSo ljy ls tfVy dh vksj jgh gSA fodkl dh bl ijaijk esa vkxs c<+rs gq, ge ewY;ksa dks lkFk ysdj pyrs gSaA ewY;ksa ds vHkko esa fdlh Hkh lekt dk fodkl ugha fd;k tk ldrkA izR;sd lekt ds ewY; ,d&nwljs ls fHkUu gksrs gaS ijaUrq lkekftd ewY; izR;sd lekt esa ik;s tkrs gSaA ;s ewY; lkekftd fojkldr gSsA ogha dkj.k gS fd lekt bu ewY;ksa dh j{kk iw.kZ fu'Bk ls djus ds iz;kl djrk gSA mu ewY;ks dh LFkkiuk esa dchjnkl ds fopkj vkt Hkh vR;ar izklafxd gSA;fn ge muds fopkjksa dks xaHkhjrk ls ns[ks rks ge ikrs gSa fd mu ewY;ksa esa mucs fopkj vkt Hkh

शोध सार

समाज के विकास की परंपरा सदैव सरल से जटिल की ओर रही है। विकास की इस परंपरा में आगे बढ़ते हुए हम मूल्यों को साथ लेकर चलते हैं। मूल्यों के अभाव में किसी भी समाज का विकास नहीं किया जा सकता। प्रत्येक समाज के मूल्य एक–दूसरे से भिन्न होते हैं परंन्तु सामाजिक मूल्य प्रत्येक समाज में पाये जाते हैं। ये मूल्य सामाजिक विरासत है। वहीं कारण है कि समाज इन मूल्यों की रक्षा पूर्ण निष्ठा से करने का प्रयास करता है। उन मूल्यो की स्थापना में कबीरदास के विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। यदि हम उनके विचारों को गंभीरता से देखे तो हम पाते हैं कि उन मूल्यों में उनके विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। कबीरदास दास जी के दोहे आज की समस्याओं के समाधान भी हमें देते हैं।

मुख्य शब्द

जीवन मूल्य, धर्म, समाज, परंपरा, मानवता.

कबीर दास जी भक्तिकाल के कवियों में प्रमुख थें वे अनपढ़ थे पर ज्ञान के भंडार थे। उन्होने स्वयं कहा है–''मसि कागद छूयो नहीं, कलम गही नहिं हाथ'' उन्होंने अपना गुरू रामानंद जी को माना। वर्तमान समय में कबीर के प्रत्येक दोहे अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय में उन्हें अपने जीवन में उतारना एवं उन पर चलना मानो समय की मांग है। मूर्तिपूजा, अवतार, मंदिर,मस्जिद आदि को वे नहीं मानते थे, उनकी दृष्टि में ईश्वर एक है और वे इस बात को अत्यंत सहज, सरल भाषा में लोगों को समझाने का प्रयास करते रहे। उन्होंने ज्ञान से अधिक प्रेम को महत्व दिया:

''पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।''

कबीरदास जी को शांति पूर्ण जीवन प्रिय था, वे सत्य, अहिंसा, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे। दूसरों से पहले अपने दोष, दुर्गुण देखने की बात वे करते थे।

''दोष पराये देखि करि, चला हसन्त–हसन्त।
अपने याद न आवई, जिनका आदि ना अंत।।''

ये दोहा वर्तमान समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, चाहे सामाजिक हो, राजनीतिक हो या पारिवारिक माहौल ही क्यों न हो यह दोहा प्रत्येक क्षेत्र में सटीक बैठता है। स्वस्थ आलोचना कोई स्वीकार ही नहीं करता, आलोचना में भी लाभ है, जिसे लोग देखना ही नहीं चाहते और दुर्व्यवहार करने लगते हैं, जो नहीं होना चाहिए। आज हर तरफ नफरत है, क्रोध है जिससे व्यक्ति अपना संतुलन खो बैठता है, और किसी से भी कुछ भी बोल बैठता है।

जबकि कोमल मृदु वाणी से व्यक्ति स्वयं भी शांत रहता है और सुनने वाले भी शांत हो जाते हैं। कबीरदास जी कहते हैंः

''ऐसी वानी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे आपहुं सीतल होय''।

महत्वाकांक्षी होना गलत है नहीं परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि व्यक्ति इसमें पड़कर अंधी दौड़ में लग जाये जहां से उसे अपनी ही सुख शांति सब कुछ खोना पड़े। आज व्यक्ति सब कुछ पा लेना चाहता है और वह भी बहुत जल्दी में। यही हमें विघटन की ओर ले जाते हैं।

कबीरदास जी के व्यक्तित्व में साधक, समाजद्रष्टा एवं साहित्यकार तीनों रूप एक साथ दिखाई पड़ते हैं। विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने विचारों से उनकी महानता को प्रस्तुत किया है। कहीं पर महान साधक संत के रूप में, कहीं महान कवि एवं जन साहित्यकार के रूप में और कहीं समाजद्रष्टा एवं दलित–शोषित मानवता के मसीहा के रूप में।

कबीरदास जी का जन्म काशी में हुआ। ''काशी एक ओर भारत की सांस्कृतिक–धार्मिक राजधानी थी, जिसके पंडितों द्वारा दी गई व्यवस्था पूरे देश को मान्य होती थी। यह व्यापार का एक बड़ा केन्द्र था, आध्यात्मिक, सांसारिक ज्ञान की गंगा भी यही बहती थी। देश–विदेश के विद्वान अपने ज्ञान की प्रमाणिकता का आधार यहाँ के पंडितों की स्वीकृति में खोजते थे। इसके साथ ही काशी सामंती समाज की पूर्ण विकृतियों को भी समेटे हुए थी।''[1] यहाँ व्याभिचार, रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास, जड़ता एवं धर्मान्धता की जड़े फैल चुकी थी। संत कबीर दास जी ने ऐसे समाज की कल्पना की थी जो उन्मुक्त दोष रहित, आदर्श समाज हो जहाँ ऊँच–नीच जाति–पाति, छुआ–छुत, अस्पृश्यता आदि के लिए कही स्थान ही न हो। एक ऐसा समाज जहाँ व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के उन्मुक्त दोष रहित जीवन जी सके। कबीर दास जी की साधना सामूहिक, सामाजिक मुक्ति के लिए है एवं उनके उपदेश मानव मात्र को मुक्त कराने के लक्ष्य से प्रेरित है। मानव मुक्ति उन्होने सामाजिक जीवन में सहजता, सत्यता एवं शुचिता लाकर करना चाहा। सामाजिक जीवन में स्थिरता लाने के लिये उन्होंने आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक जीवन मूल्यों की स्थापना की।

आज का समाज कबीर युगीन समाज से निश्चित ही भिन्न है, परंन्तु अनेक समस्याएँ आज भी ऐसी हैं जिन्हें संत कबीर ने अपने समाज में देखा था। समाज की विसंगतियों एवं नेतृत्वकर्ताओं के खोखलेपन की जो अनुभूति कबीरदास जी को हुई थी, वही अनुभूति आज के जनमानस को हो रही है। आज भी ऊँच–नीच एवं जाति–पाति संबंधी अनेक विवादों के साथ जनमानस के बीच से प्रेम भाव मानो लुप्त होता जा रहा है। कबीर दास जी का समय मध्य काल है जिसमें जीवन का परिचालन धर्म द्वारा होता था अतः वह युग धर्म जीवी था, जिसमें अनेक प्रकार के धार्मिक संगठनों ने लोगों को धर्म के नाम पर गुमराह किया और आज का युग बुद्धिवादी राजनीतिक दाव–पेचों का युग है जिसमें विभिन्न राजनीतिक संगठन हमें दिग्भ्रमित कर रहे हैं। सही दिशा की तलाश की आवश्यकता उस युग में भी थी और आज भी है। निम्न विचारों से घिरे हुए वे लोग जो किसी भी सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने

में तो सक्षम नही हैं, परन्तु समाज में अग्रणी होने का दावा करते हैं।

संत कबीर का संघर्ष किसी व्यक्ति या संप्रदाय के विरूद्ध नही था, अपितु उन मठाधीशों के विरूद्ध था जिनमें संवेदनाएँ नहीं थी। आज भी वही स्थिति है। भारतीय समाज में जैसी विस्फोटक स्थिति आज है, कदाचित ही कभी रही होगी। जातिवाद, धार्मिकता–अधार्मिकता का प्रश्न, भौतिक सुखों को प्राप्त करने की अमानवीय प्रतिस्पर्द्धा ने आज भारतीय समाज को विघटन के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। अतः भारतीय समाज एक बार पुनः विनाश की ओर जा रहा है।

कबीर दास जी आदर्श समाज के निर्माण के लिए व्यक्ति का चरित्रवान, आदर्शवान, परोपकारी एवं संवेदनशील होना आवश्यक मानते थे, क्योंकि व्यक्ति से समाज बनता है। व्यक्ति यदि चरित्रवान हो एवं आदर्शो को हृदय से ग्रहण कर ले तो समाज की अनेक समस्याओं का समाधान स्वयं ही मिल जाएगा। संत साहित्य मुख्य रूप से धार्मिक है, परन्तु समाजिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण मिलता है। संतो में समाज के आचार–विचार के प्रति तीव्र असंतोष था। धर्म के नाम पर नैतिक मूल्यों का ह्रास देखकर मानव व्यवहार की शुद्धि के लिए वे अत्यंत चिन्तित थे। वे समाज की नवीन रचना के लिए जीवन में पुनः मूल्यों की प्रतिष्ठा देखने के लिए आतुर थे। इनके लिये व्यापक जन जीवन को समग्रता में प्रभावित करने वाला एक मात्र साधन साहित्य ही हो सकता था।

समाज व्यवस्था एवं धर्म व्यवस्था एक दूसरे के पूरक हैं। संत कबीर दास जी के समय में ''एक ओर पीढ़ी–दर–पीढ़ी ज्ञान और वैभव उच्च वंशीय परम्पराओं और विशिष्ट जीवन शैली का अभिमानी तथा उच्च पदों पर आसीन सामंन्त वर्ग रहता है, जिसकी छत्रछाया में पंडित, पुरोहित, मुल्ला, काजी तथा अन्य बुद्धिजीवीयों का वर्ग रहता है, दूसरी ओर साधारण किसान और कारीगर, छोटे–मोटे, दुकानदार और समाज के दीन–हीन लोग होते हैं, जो उच्च वर्ग द्वारा शोषित और पीड़ित होते थे और निम्न वर्ग में जन्में व्यक्ति को छूने या उसके पास से गुजरने पर भी उन्हें दण्ड दिया जाता था।''[2] निम्नवर्ग के आवास, घरेलू स्थिति, पात्र आदि मार्मिक चित्र कबीर दास जी के पदों में मिलते हैं। निम्न वर्गीय लोगों के घरों की दीवारें कच्ची होती थीं, उनके घरों में पात्र मिट्टी के होते थे। ये आन्धी–तूफान का सामना करने में सक्षम नही थे। गरीबों की अत्यंत दयनीय स्थिति का वर्णन कबीर दास जी ने किया है।

कबीर दास जी के अनुसार जन्म से सब जीव समान हैं। कोई ऊँच या नीच नही है। प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने कर्मो के अनुसार अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है। कबीरदास जी की मान्यता थी कि प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मो के अनुसार ही गति मिलती है स्थान के कारण नही और अपनी इस मान्यता को सिद्ध करने के लिए ही वे अपने अंतिम समय में काशी से मगहर चले गये क्योंकि लोगों कि यह मान्यता थी कि काशी में मरने से स्वर्ग मिलता है।

''नहीं को ऊँचा नहीं को नीचा,
जाका प्यंड ताही का सींचा।।''[3]

अतः कबीरदास जी की प्रत्येक बात आज उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके समय में थी।

आज कल धन दौलत एवं भौतिक सुख सुविधाओं के साधनों को प्राप्त करने में व्यक्ति सही गलत का अंतर भूल चुका है इसलिए अपराध बढ़ रहा है। सबसे बड़ी समस्या उत्पन्न होती हैं, जब व्यक्ति अपने को सर्वोच्च समझकर दूसरों को हीन समझने लगता हैं, ऐसे लोगों के लिए कबीर दास जी कहतें हैंः

''कबीर घास न निंदिये जो पावें तलि होई।
उड़ि पड़े आँख में खरा दुहेला होई।।''[4]

कबीर दास जी मानवीय एकता पर बल देते हैं, इस बात पर बल देते हैं कि मानव को सर्वप्रथम स्वयं को सुधारने की आवश्यता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को सुधार ले तो समाज से अनेक बुराइयाँ स्वतः ही समाप्त हो जायेंगी तथा एक उन्मुक्त दोषरहित, आदर्श समाज का निर्माण होगा।

ज्ञान प्राप्ति के लिए कबीरदासजी ने गुरू के महत्व को सर्वोपरि माना है। उनके अनुसार गुरू और गोविंद एक ही है एवं वही सच्चा गुरू है जो सद्उपदेश से शिष्यों को सन्मार्ग पर ले आये एवं वही सच्चा शिष्य है जो अपने गुरू द्वारा बताये मार्ग पर मन, वचन एवं कर्म से चले। हम आज के संदर्भ में देखें तो यह केवल वाणी की शोभा बनकर रह गया है, जो व्यवहार से कोसों दूर है। प्राचीन काल में गुरू शिष्य का संबंध सबसे बड़ा, अत्यंत पवित्र एवं सम्मानीय था, परंतु वर्तमान समय में गुरू शिष्य की परिभाषा ही बदली हुई है।

कबीर दास जी आदर्श समाज के निर्माण में नारी की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं। वर्तमान समय में स्त्री पुरूषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं, हर क्षेत्र में पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं ऐसे में किसी समाज के विकास में स्त्रियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। समाज के संगठन में परिवार का संगठन महत्वपूर्ण है, पारिवारिक जीवन की शांन्ति व्यवस्था, सुख समृद्धि एवं प्रगति स्त्री के चारित्र पर निर्भर है। त्यागमूर्ति, स्वपतिप्रेम में अनुरक्त पतिव्रता स्त्री की प्रशंसा करते हुए कबीरदास जी कहते हैं:

''पतिबरता मैली भली काली कुचित कुरूप।
पतिबरता के रूप पर वारों कोटि सरूप।।''[5]

चरित्रहीन स्त्री की घोर निंदा भी संत कबीर ने की है:

''नारी की झाई परत अंधा होत भुजंग।
कबीरा तिनकी कौन गति नित नारी को संग।''[6]

कबीरदास जी मानव के गुणों को ही प्रधान मानते हैं क्योंकि अपने सद्गुण एवं अच्छे व्यवहार के कारण ही मानव महान बनता है।

समाज के विकास की परंपरा सदैव सरल से जटिल की ओर रही है। विकास की इस परंपरा में आगे बढ़ते हुए हम मूल्यों को साथ लेकर चलते हैं। मूल्यों के अभाव में किसी भी समाज का विकास नहीं किया जा सकता। प्रत्येक समाज के मूल्य एक–दूसरे से भिन्न होते हैं परंन्तु सामाजिक मूल्य प्रत्येक समाज में पाये जाते हैं। ये मूल्य सामाजिक विरासत हैं। यही कारण है कि समाज इन मूल्यों की रक्षा पूर्ण निष्ठा से करने का प्रयास करता है।

प्रेम एक ऐसा मूल्य है जो कभी समाप्त नहीं हो सकता। दया, करूणा, प्रेम, परमार्थ, विनय आदि नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिये प्रयत्नशील संत कबीर के विचारों में एक श्रेष्ठ समाज की परिकल्पना निहित है। उन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों को केवल देखा ही नहीं अपितु अनुभव भी किया था। उनके सामाजिक दर्शन का मूल तत्व है कर्म एवं त्याग। उनके अनुसार अपने स्वत्व, अपने दर्शन और मान्य मूल्यों की रक्षा के लिये समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सचेत हो जाना चाहिए। संत कबीर ने सभी धर्मों की कुरीतियों, बुराइयों का विरोध कर शुद्ध मानवतावादी धर्म की स्थापना के लिये भरपूर प्रयास किये जहाँ किसी प्रकार का भेदभाव, ऊँच–नीच, जाति–पाति, छुआ–छूत आदि न हो। मानव स्वतंत्र रूप से बिना किसी अपमान के दोष रहित जीवन जी सके। संत कबीरदास जी के अनुसार सभी मानव एक ही समाज के अंग है। सभी एक विशाल वृक्ष की विभिन्न शाखाओं के समान है, जिनमें कोई अंतर नहीं है।

निष्कर्ष

आज के समय में जाति–पाति, छुआ–छूत का भेद बहुत अधिक नहीं दिखाई देता, परन्तु इसका स्थान अब आर्थिक समस्याओं ने ले लिया है। पहले जाति–पाति का भेदभाव बहुत था, अब आर्थिक स्थिति के अनुसार लोगों में भेद है। अधिक पैसे वाले लोगों को समाज में सम्मान मिलता है तो गरीब लोगों को कोई दोष नहीं होते हुए भी हेय की दृष्टि से देखा जाता है। अतः कबीर युगीन समाज और आज के समाज में अधिक अंतर नहीं है। संत कबीर की दृष्टि में इस संसार में ''मानवता'' ही एक मात्र जाति है, सत्य ही एक मात्र धर्म है और ''सर्वव्यापी परमात्मा'' ही एक मात्र ईश्वर है। यदि आज का समाज कबीर दास जी के इस मंत्र को, इस सूत्र को अपना कर अपने जीवन में लागू करे तो कदाचित् प्रत्येक समाज का विकास निश्चित है।

संदर्भ सूची

1. वंशी बलदेव, कबीर एक पुर्नमूल्यांकन पृ.– 127।
2. वंशी बलदेव, कबीर एक पुर्नमूल्यांकन पृ.–128।
3. ब्रह्मचारी रामाश्रय दास, संतकबीर और उनका दर्शन, पृ.– 229।
4. वंशी बलदेव, कबीर एक पुर्नमूल्यांकन पृ.– 124।
5. ब्रह्मचारी रामाश्रय दास, संतकबीर और उनका दर्शन, पृ.– 225।
6. ब्रह्मचारी रामाश्रय दास, संतकबीर और उनका दर्शन पृ.–224।

****